35

vk|&,frgkfld lQb% rke'fuf/k;k ,o xfjd enHkk.M dk lxeLFky

***Mk- Ñ".k dkUr ;kno**

इतिहास के पूर्व के काल को आद्य–ऐतिहासिक काल कहते हैं। यह वह काल है जिसका लेखन साक्ष्य प्राप्त हो चुका है किन्तु वह अपठनीय है। आद्य–ऐतिहासिक काल के अर्न्तगत ताम्र पाषाण काल आता है। मानव ने जीवन में सर्वप्रथम तांबा धातु का प्रयोग किया था। इस युग में मानव ने पत्थर के साथ–साथ तांबे के हथियारों का प्रयोग करना आरंभ किया। आद्य–ऐतिहासिक काल की बस्तियों के प्रमाण भारत के विभिन्न स्थानों से प्राप्त हुये हैं। जैसे–दक्षिण–पूर्वी राजस्थान की बनास घाटी में अहाड़ तथा गिलुंद, नेवासा, दैमाबाद, सोनपुर और उत्तर प्रदेश में रैवराडीह, नौहान आदि स्थानों से प्राप्त होते हैं। ताम्रपाषाण संस्कृति की एक विशेषता है गैरिक मृदभाण्ड या ओ.सी.पी., जिसे आकर्ड कलर्ड पॉट्री भी कहा जाता है। इसकी सामान्य विशेषता यह है कि इसके मृदभाण्ड़ों पर गीली मिट्टी का लेप रहता है। इस तरह के मृदभाण्ड नमी के सम्पर्क में आने पर जिस वस्तु के साथ होते हैं उस पर अपना लेप छोड़ देते हैं।

ताम्रकालीन संस्कृति की अन्य विशेषतायें हैं जैसे–उत्पादन विधियों का आविष्कार, पशुओं के उपयोग की जानकारी, तथा स्थायी निवास स्थान बनाकर समूह में रहने की प्रवृत्ति का विकास जिसके कारण ग्राम्य जीवन का प्रारम्भ हुआ।[1]

उत्तर भारत में ताम्रनिधियों का प्रसार गंगा–यमुना के दोआब[2] के अनेक स्थानों जैसे–राजपुर,– परसू (बिजनौर), फतेहगढ़, बिठूर (कानपुर), परिहर (उन्नाव), बिसौली (बदायू), सरथौली (शाहजहांपुर), मानपुर (बुलन्दशहर), बहदराबाद (सहारनपुर), सैफई (इटावा) आदि स्थानों में प्राप्त हुआ है। ''यहाँ से गैरिक मृदभाण्ड (O.C.P.) के साथ

***vfl- ikQlj] pk- pj.k flg ih-th- dkyst] gjojk&bVkokA**